# हिंदी साहित्य विशेषांक

# भूमंडलीकरण और हिंदी साहित्य


**VALUME- 5**

**SPECIAL ISSUE NO - 22**

**Aayushi International Interdisciplinary Research Journal**

Impact Factor 4.574 ISSN –2349-638x

UGC Approved Sr.No.64259



**अतिथी संपादक**

**डॉ.अरिफ महात**

**मुख्य संपादक**

**प्रमोद प्र. तांदळे**


Scanned by CamScanner

| Sr.No. | Author Name | Research Paper / Article Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 21. | प्रा. डॉ. शेख मुखत्यार शेख वहाब | सुनीता जैन के कहानियों में पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण | 64 To 67 |
| 22. | प्रा. डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर | भूमंडलीकरण और हिंदी भाषा | 68 To 70 |
| 23. | डॉ.नवनाथ गाड़ेकर | हिंदी सिनेमा : संदर्भ और प्रकृति | 71 To 72 |
| 24. | प्रा. एन. व्ही. जाधव<br>प्रा. वाय. एस. गायकवाड | भूमंडलीकरण और हिंदी कविता : संवेदना के स्वर | 73 To 76 |
| 25. | डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले | भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य ('ईंधन' उपन्यास के विशेष संदर्भ में) | 77 To 80 |
| 26. | प्रा. चौधरी अनिता विश्वानाथ | भूमंडीलीकरण की चुनौतियाँ : संचार माध्यम और हिंदी का संदर्भ | 81 To 83 |
| 27. | डॉ. आरिफ जमादार | भूमंडलीकरण और राष्ट्रवाद | 84 To 85 |
| 28. | प्रा. नयन भादुले–राजमाने | भूमंडीलीकरण और हिंदी भाषा | 86 To 87 |
| 29. | प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड | 'नस्ल' कहानी में बाजारवाद | 88 To 94 |
| 30. | डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत | वैश्वीकरण – बाजारीकरण और हिंदी | 95 To 97 |
| 31. | डॉ.दीपक रामा तुपे | टूटते सपनों का कडुआ सचः जानकीदास तेजपाल मैनशन | 98 To 100 |
| 32. | व्यँकट बा धारासुरे | समकालीन हिंदी कविताओं मेंभूमंडलीकरण एवं युगबोध | 101 To 104 |


www.aiirjournal.com
ISSN 2349-638x
www.aiirjournal.com



Scanned by CamScanner

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

| Volume No. 5 Special Issue No.22 | भूमंडलीकरण और हिन्दी साहित्य | ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574 |
|---|---|---|

# टूटते सपनों का कड़ुआ सच : जानकीदास तेजपाल मैनशन

**डॉ. दीपक रामा तुपे**
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
दत्ताजीराव कदम आर्टस्, साइन्स एंड कॉमर्स,
इचलकरंजी—४१६११५.

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। जहाँ पर उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण की हवा बह रही है। इनमें भूमंडलीकरण की हवा पूरी सक्रियता के साथ समग्र विश्व में विस्तारित हो रही है। इसी भूमंडीकरण के कारण आज पूरा विश्व . वैश्विक ग्राम में तब्दील हो गया है। भूमंडलीकरण के कारण हम एक—दूसरे के करीब तो आ चुके हैं, लेकिन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक जैसे क्षेत्र एक—दूसरे से अपरिचित हो रहे हैं। इसी परिचय की वजह से हमारा साहित्यकार भी भूमंडलीकरण के प्रभाव से प्रभावित है। हमारा समाज अन्यान्य समस्याओं से ग्रस्त है। हमारी संस्कृति पर देश—विदेश की संस्कृतियों का असर हो रहा है, जिसके कारण हमारी संस्कृतिक धरोहर बचाए रखना एक चुनौती बन गई है। अलका सरावगी लिखित 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' प्रकाशन क्रम के अनुसार पाँचवाँ उपन्यास है, जो राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन् २०१५ ई. में प्रकाशित हो चुका है। प्रस्तुत उपन्यास भूमंडलीकरण से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं को हमारे सम्मुख रखता है और देश पर आने वाले खतरों के प्रति सजग करता है। इस उपन्यास की कथा कलकत्ता के सेंट्रल ऐवन्यू स्थित 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' नाम की अस्सी परिवारों की एक खड़ी इमारत के इर्द—गिर्द घूमती है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक जयगोविंद सन् १९७० ई. के दशक में कोलकाता के जादवपुर विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करता है और पिताजी एडवोकेट बाबू उन्हें अमेरिका के मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी से कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की मास्टर डिग्री करने भेजते हैं। बेटे जयगोविंद को अमेरिका भेजने के लिए माँ का विरोधी है, लेकिन पिता के आग्रह से वह अमेरिका में कम्प्यूटर की मास्टर डिग्री करता है। अमेरिका में सात साल बिताकर जयगोविंद कोलकाता लौट आता है और वह न इधर का रहता है और न उधर का। जयदीप हिंद मोटर कंपनी में नौकरी जरूर प्राप्त करता है, मगर टिक नहीं पाता। इस कदर एडवोकेट बाबू और माँ का दिल टूट जाता है। उसके बाद स्टील ट्रेडिंग कंपनी शुरू करता है, मगर उन दिनों स्टील खरीदना और बेचना गैरकानूनी था। परिणामस्वरूप उसे जेल जाना पड़ता है। जेल का मामला रफा—दफा करने के बाद वह व्यासजी की मदद से वह राजारामबाबू का ए. डी. सी. बनकर रह जाता है यानी राष्ट्रपति के पीछे खड़ा रहने वाले सुदर्शन या रोबोटनुमा चौकन्ना व्यक्ति की तरह। राजाराम बाबू को हर काम वह करता रहता है। दिल्ली मंत्रालय सहित हर जगह वह अपनी पहुँच बना देता है। राजाराम बाबू से छुटकारा पाने के बाद उसका दोस्त प्रीतम भंन्साली का कोलकत्ते स्थित बेहाला की जमीन खाली करने का काम उसके पास आता है। बेहला के सबसे बड़े मस्तान दिवाकर घोष की मदद से बेहाला की जमीन लगभग खाली कर कई लोगों को बेघर बना देता है, मगर एक बुढ़िया वहाँ से जाने के लिए तैयार नहीं होती। उस बुढ़िया के पास दूर का भतीजा रहता था। दिवाकर ने भतीजे की मदद से नींद की गोली खिलाकर उसे इस दुनिया से बेघर कर दिया। इधर आफताब हुसैन ने कॉरपोरेशन के चीफ इंजीनियर की सिफारिश पर जानकीदास तेजपाल मैनशन को गिरा दिया और जयदीप को बेघर कर दिया। अपने को बेदखल किए जाने



Scanned by CamScanner

की पीड़ा दूसरों को बेदखल करने में आड़े नहीं आती। "इधर बुढ़िया भागी, इधर जयदीप। एक ही रात में दोनों बेघर हो गए थे। ...बेदखल होना और बेदखल करना एक साथ होते ही है। यह तो जीवन का शाश्वत सत्य है।"[1] संयोग की बात यह है कि किसी को बेदखल करना या बेदखल होना एक ही सिक्के दो पहलू है। लेखिका अलका सरावगी ने जयदीप के माध्यम से जीवन के इस शाश्वत सत्य उजागर कर दिया है।

आधे उपन्यास में वह अपना जीवन जयदीप के रूप में जीता है और आधे उपन्यास में बड़े बाजार को नेशन स्टेट से रीयल इस्टेट बनाने की यथार्थता में जीता है। 'विडंबना यह नहीं है कि जयगोविंद का जीवन जयदीप से असम्पृक्त है बल्कि दोनों को अलग करना मुश्किल है और टेढ़ी खीर भी।' फर्क यह है कि वास्तविक आत्मकथा लिखने के प्रयास में वह बार–बार अपने आपको बचाने की कोशिश करता है, जो अपने ही लिखे को सही नहीं मानता। इस क्रम में आजादी के बाद इस देश की जवान पहली पीढ़ी को मिले धोखे और नाकामयाबी सिस्टम की दास्तान अमेरिका के वियतनाम–युद्ध से लेकर विकीलीक्स के धोखे तक फैली है। जयगोविंद के नए. आर. आई. मित्र हैं, जो इंफेक्शन के डर से इंडिया नहीं आते और वह लौटने के लिए तड़पता रहता है। जयदीप का बेटा रोहित, जो विदेश में पढ़कर आया है वह इंडिया को चिडियाघर कहता है। इस चिडियाघर के कोलकाता शहर में जानकीदास तेजपाल मैनशन नामक इमारत की वास्तविकता मेट्रो की सुरंग लगाने से ढहने और ढहाए जाने में है। इस इमारत को बचाने के लिए जयगोविंद जी–जान से प्रयास करता है। इसके लिए वह मेट्रो–पीड़ित बंधु एसोसिएशन प्रेसिडेंट का अध्यक्ष भी बन जाता है। यह इमारत अपने देश का प्रतीक है। यह इमारत गुजरती बस की आवाजाही से हिलता रहता है; जिसका गिर जाना तय है। "सड़क पर गुजरती हर बस के साथ हिलता 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' एक नया अर्थ–संकेत है–पूरे देश का, जिसका ढहाया जाना तय है। राजनीति, प्रशासन, पुलिस और पूँजी के बीच बिचौलियों का तंत्र सबसे कमजोर को सबसे पहले बेदखल करने में लगा हुआ है।"[2] स्पष्ट है कि आज राजनीति, प्रशासन, पुलिस और पूँजीपति 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' की तरह देश को ढहाने में तुले हुए है, जिसे बचाना एक चुनौती बन गई है, लेखिका अलका सरावगी देशवासियों से इसी चुनौती से अवगत कराना चाहती है। उपन्यास सिर्फ विस्थापन की समस्या ही नहीं बल्कि अंडरवर्ल्ड गैरकानूनी ढंग से धन कमाने, सौदेबाजी, जुगाड़ की दुनिया, नेशन स्टेट, रियल इस्टेट, नाकाम सिस्टम की दास्तान, अमेरिका के वियतनाम–युद्ध से लेकर विकीलीक्स के धोखे तक कई भूमंडलीय मसले हैं, जो पाठक सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं। राजनीति, प्रशासन, पुलिस, नक्सली और पूँजी के बीच के बिचौलियों का तंत्र सबसे कमजोर लोगों को जानकीदास तेजपाल मैनशन से अर्थात् देश से पहले बेदखल करने में तुले हुए है। लेकिन नायक जयदीप उसे बचाना चाहता है। यहाँ के अंडरवर्ल्ड गैरकानूनी ढंग से धन हड़पने, सौदेबाजी और जुगाड़ की दुनिया से पैसे ऐंठकर देश को ढहाने में लगे हुए है। इस दुनिया के कई पात्र हमारे जाने हुए है, लेकिन हम नहीं जानते कि वे किस हद तक हमारे जीवन को चलाते हैं और कब हमें अपने में शामिल कर लेते हैं। दूसरा शाश्वत सत्य यह भी है कि "क्या दिया है आजादी ने? क्या दिया नेहरू की सड़ी हुई योजनाओं ने? आजादी के पास खाने के लिए भरपेट रोटी नहीं है और ये लोग लोकतंत्र का बाजा बजाकर हमें गूँगा–बहरा रखना चाहते हैं। जब पब्लिक अनाज की दुकानों पर हमला करके उन्हें लूटेगी, तो ये लोग उसे बंदूक की गोली खिलाएंगे। उसके लिए इनके पास पैसे हैं। गोली के लिए पैसे नहीं..."[3] स्पष्ट है कि हमारी आजादी के पास खाने के लिए भरपेट रोटी नहीं है, गोली के लिए पैसे नहीं है,



Scanned by CamScanner

मगर लोकतंत्र के नाम पर बंदूक की गोली खिलाई जाती है। यही भूमंडलीय शाश्वत सत्य है।

इस दौरान उपन्यास में जयदीप की माँ तिरबेनीबाई, एडवोकेट बाबू, पत्नी दीपा, बेटा रहित और सुमित, प्रेमिका मिशेल, हर्षद मेहता, समर शुक्ला, रमेश खेतान, गोवर्धन दास, राधेश्यामबाबू उर्फ राजारामबाबू, मिंटू चौधरी, समरेंद्र किल्ला उर्फ सैमकी, ज्योतिमर्य गुप्ता, जयंत भाई, नक्सली नेता देवनाथ मुखर्जी, जतींद्र मोहन, नेताजी सुभाषचंद्र बोस के विचारों का अनुयायी शांतनु बैनर्जी, ऊषा अय्यर उफ ऊषा उत्थुप, मजदूर नेता अशोक तिवारी, राजीव मिश्रा, दीपंकर सेन, प्रीतम भंसाली, सिनियर बिडला, आर. एन. मुखर्जी, असीम चटर्जी, शेखर रतन, जादवपुर विश्वविद्यालय के कुलपति गोपाल सेन, अफताब हुसैन, राजू बंसल, विमल कोठारी, प्रियरंजनदास मुंशी, दरबान तिवारी, विजय जैन, सुमेधा बने, बालानंद पंडित, व्यास आदि पात्रों की छोटी–छोटी कथाओं के माध्यम से भूमंडलीय मुद्दों को उठाकर उपन्यास को गति देने में सफल रहे हैं। उपन्यास की भाषा पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकूल है। संवाद बहुत ही कम और संक्षिप्त है। आजादी की पूर्व स्थिति और आजादी के बाद का काल का माहौल प्रस्तुत में अंकित है। भाषा सीधी, सरल, सरस है, लेकिन बंगाली के प्रभाव से प्रभावित भी है। साथ ही भाषा में अंग्रेजी शब्दों की भरमार दिखाई देती है जो भूमंडलीकरण का ही प्रभाव मानना होगा। उपन्यास का शीर्षक 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' समर्पक है। जिस तरह जानकीदास तेजपाल मैनशन गिरने की स्थिति में है, उसी प्रकार अपने देश का सुनहरा भविष्य भी विनाश की कगार पर है, जो बिलकुल टूटते सपनों का कडुआ सच है। लेखिका प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से विनाश की ओर जा रहे देश को बचाने का संकेत देती है। जानकीदास तेजपाल मैनशन के माध्यम से हमारे पुराने मूल्य ध्वस्त होते जा रहे हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण के प्रभाव में हमारे पुराने मूल्य, साहित्य, संस्कृति, हमारी धरोहर बचाने की बहुत बड़ी चुनौती है। आज हमारे देश की राजनीति, प्रशासन, पुलिस व्यवस्था, नक्सली और पूँजीपति, आतंकवादी, बिचौलिए हमारा लोकतंत्र, जानकीदास तेजपाल मैनशन से अर्थात् देश से बेदखल करने में तुले हुए हैं। जानकीदास तेजपाल मैनशन हमारे देश का प्रतीक है। यह घर यानी हमारा देश है और यह घर जिन समस्याओं से जूझ रहा है उन्हीं समस्याओं से आज हमारा भारत देश जूझ रहा है। इसी कारण जानकीदास तेजपाल मैनशन का भविष्य खतरे में पड़ा हुआ है यानी देश का भविष्य खतरे में पड़ा हुआहै। अंडरवर्ल्ड गैरकानूनी ढंग से धन हड़पने, सौदेबाजी और जुगाड़ की दुनिया से पैसे ऐंठकर देश को ढहाने में लगे हुए है। इस दुनिया के कई पात्र हमारे जाने हुए है, लेकिन हम नहीं जानते कि वे किस हद तक हमारे जीवन को चलाते हैं और कब हमें अपने में शामिल कर लेते हैं। आज भूमंडलीकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं के चलते हमारी संस्कृति खतरे में पड़ गई है। सांस्कृतिक धरोहर बचाए रखने के लिए हमारे साहित्य में न्याय, समता, बंधुता जैसे मानवीय मूल्य का संवहन होना जरूरी है।

**संदर्भ संकेत:**

१.अलका सरावगी, जानकीदास तेजपाल मैनसेन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–२०१५, पृष्ठ–१८४

२. वही, मलपृष्ठ से उद्धृत।

३.http://aajtak.intoday.in/story/review-of-alka-saraogis-novel-jankidas-tejpal-mansion-by-suresh-kumar-1-821676.html



Scanned by CamScanner